ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन

मनीष कुमार वर्मा*

शोधार्थी, शिक्षा संस्थान, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी
E-Mail: manis1dec@gmail.com
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18200267
Accepted on: 25/12/2025 Published on: 10/01/2026

सारांश:

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए शोधार्थी ने 100 ट्रांसजेण्डरों का चयन किया। न्यादर्श का चयन आकस्मिक एवं उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि से किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। मानसिक योग्यता को ज्ञात करने के लिए ग्रामीण व शहरी एवं अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित में वर्गीकृत किया। आंकड़ों के संकलन हेतु शोधार्थी ने अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर, परिकल्पनाओं के विश्लेषण हेतु टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है। परिकल्पनाओं के विश्लेषण के आधार पर ट्रांसजेण्डरों के मानसिक योग्यता में अंतर प्राप्त हुआ है।

मुख्य शब्द: *मानसिक योग्यता, ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डर एवं अल्प व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डर।*

प्रस्तावना:

भारतीय संविधान मे शिक्षा का अधिकार सभी को प्रदान किया गया है। शिक्षा पाकर हम जीवन में आने वाली कठिनाइयों को आसानी से सामना कर समायोजन करते हैं। शिक्षा के द्वारा बच्चों का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक विकास किया जाता है। हमारे समाज में आज भी शिक्षा से वंचित बच्चे हैं, जो कहीं ना कहीं लक्ष्य को पूर्ण नहीं होने दे रहे हैं। समाज में स्थित विद्यालयों में बच्चों को शिक्षा समान रूप से प्रदान की जाती है। आज सभी लोग अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। इसी समाज में भेदभाव भी व्याप्त है। एक ही परिवार के बच्चों में भेदभाव चाहे वह लड़का/लड़की या अन्य (ट्रांसजेण्डर) हो। प्रकृति ने हमें जैविक संरचना के आधार पर अलग अलग पहचान दी है। लैंगिक विभाजन के आधार पर महिला/पुरुष व ट्रांसजेण्डर के रूप में विभाजन किया गया है। संवैधानिक समानता प्रावधानों के बावजूद ट्रांसजेण्डरों के साथ भेदभाव होता है। वे लैंगिक आधार पर भिन्न हैं, न कि मानसिक आधार पर वह महिला व पुरुष से भिन्न है। उनमें भी मानसिक योग्यता समान होती है। आज 21वीं सदी में ट्रांसजेण्डर समाज अपना लोहा मनवा रहे हैं। वे भी महिला व पुरुष की तरह सामाजिक कार्यों सरकारी सेवाओं योगदान दे रहे हैं। अभी हाल ही में मंजमा जोगती को अपने कला कौशल से पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित किया गया, जो कि अपने आप में एक अनूठा प्रयास है। जिससे प्रमाणित होता है कि ट्रांसजेण्डरों में भी विशिष्ट योग्यताएं होती हैं। हमें उनके साथ हो रहे भेदभाव को रोकना चाहिए। बालक, बालिकाओं की मानसिक

योग्यता पर **सोनी, सुरेखा (2020), अल- ओवेदी, ए.एम., और कुतिशात, एफ. आई. (2022)** द्वारा अध्ययन किये गये हैं।

आवश्यकता एवं महत्व:

बच्चों के जन्म से 6 वर्ष के बीच के समय को मस्तिष्क एवं शारीरिक विकास के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। क्योंकि बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत भाग 6 वर्ष की आयु तक विकसित हो जाता है। जब बच्चा 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर लेता है तब उसका मस्तिष्क पूर्ण रूप से विकसित हो चुका होता है।'' (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) इसीलिए बच्चे की प्रारंभिक बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक अच्छी शिक्षा का प्रबंध एवं प्रशिक्षण दिया जाता है। तब उसका मानसिक विकास सही मायने में हो पाता है। मानसिक योग्यताओं के विकास में पर्यावरण एवं वंशानुक्रम का विशेष योगदान होता है। ट्रांसजेण्डर जो कि जैविक विभिन्नता को दर्शाता है। अपने अस्तित्व की लड़ाई के लिए प्रयासरत है। इन सभी प्रयासों के बावजूद ट्रांस समुदाय शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल नहीं हो पाया है। पूर्व में किए गए शोधों से ज्ञात हुआ कि ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता पर अध्ययन नहीं किए गए हैं। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत विषय को शोध अध्ययन के लिए चुना।

समस्या कथन - ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।

समस्या कथन में शब्दों की कार्यात्मक परिभाषा:

ट्रांसजेण्डर: ट्रासजेण्डर को हिजड़ा, खोजा, किन्नर, छक्का अथवा थर्ड जेण्डर भी कहते हैं। ट्रांसजेण्डर व्यक्ति की पहचान ट्रांस महिला और ट्रांस पुरुष के आधार पर होती है। (पूनम एवं रामशकल 2016) प्रस्तुत शोध अध्ययन में ट्रांसजेण्डरों से आशय बुंदेलखण्ड क्षेत्र में शादी समारोह, जन्मदिन आदि में शुभकामनाएं, बधाइयॉ, गीत, गाना-बजाना करते हैं, से है।

मानसिक योग्यता: प्रस्तुत शोध में ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता से आशय उन सभी मानसिक प्रक्रियाओं से है। जो एक ट्रांसजेण्डर के भीतर जन्म से ही विकसित होने लगती हैं। सभी व्यक्तियों में मानसिक योग्यता अलग-अलग होती है। उनमें आपस में भिन्नता होती है। मानसिक योग्यता को विभिन्न रूपों में जाना जाता है। जैसे- समायोजन, समस्या समाधान, ध्यान, रुचि, स्मृति, कल्पना, तर्क, निर्णय लेना आदि। विद्यार्थियों के जीवन में सीखने की अक्षमता में अंतर, स्मृति में भिन्नता, समस्या को हल करने में वैयक्तिक अंतर मानसिक योग्यता का ही परिणाम है।

अल्प शिक्षित: कक्षा 1 से 5 तक शिक्षा प्राप्त ट्रांसजेण्डर।

औसत शिक्षित: कक्षा 6 से 12 तक शिक्षा प्राप्त ट्रांसजेण्डर।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ:

1. ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर नहीं है।
4. औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमायें:

1. प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अंतर्गत सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्रामीण व शहरी एवं अल्प शिक्षित (कक्षा 1-5 तक) व औसत शिक्षित (कक्षा 6-12 तक) शिक्षा प्राप्त ट्रांसजेण्डरों का चयन किया गया है
3. प्रस्तुत शोध में केवल 18-40 वर्ष आयु वर्ग के 100 ट्रांसजेण्डरों को शामिल किया गया है।

सम्बन्धित शोध अध्ययनों की समीक्षा:

सोनी, सुरेखा (2020) ने विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता और शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में शोधकर्ता ने उदयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 150 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से न्यादर्श का चयन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का पता लगाना था। निष्कर्ष में पाया कि विभिन्न आयु समूहों के विद्यार्थियों के बीच संख्यात्मक क्षमता कारक, क्रमिक अधिगम और समस्या समाधान क्षमता कारक के लिए उनकी क्षमता में अंतर पाया गया।

अल- ओवेदी, ए.एम., और कुतिशात, एफ. आई. (2022) ने रेवेन के मानसिक क्षमताओं के प्रगतिशील मैडिक्स पर बधिर और गैर बधिर छात्रों की मानसिक क्षमताः एक तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने 307 विद्यार्थियों का चयन किया, जिनमें 188 गैर बधिर और 119 बधिर छात्र थे। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि बधिरों का प्रदर्शन औसत (19.67) था, जबकि गैर बधिरों का (28.91) था। लिंग के आधार पर बालक एवं बालिकाओं के परिणामों कोई अन्तर नहीं था। जबकि गैर बधिर पुरुषों एवं महिलाओं के बीच अंतर पाया गया।

शोध विधि: शोध अध्ययन में 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया है।

न्यादर्शन विधि - प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श विधि के रूप में उद्देश्यपूर्ण व प्रासंगिक न्यादर्श विधि का चयन किया है।

उपकरण - प्रस्तुत शोध अध्ययन में मानसिक योग्यता का मापन करने हेतु R.B. Cattel and A. K. S. Cattel द्वारा निर्मित उपकरण अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण Test of 'g' Culture fair Test Scale 3 का प्रयोग किया गया है। यह परीक्षण आयु वर्ग 14 वर्ष एवं इससे ऊपर के प्रतिदर्श पर मानकीकृत किया गया है।

आंकडों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचन:

परिकल्पना - 01 ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक - 01 ग्रामीण व शहरी ट्रसजेण्डरों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात।

ट्रांसजेण्डर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अंतर	क्रांतिक अनुपात	स्वतंत्रता के अंश	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	50	13.54	4.214	2.04	2.203	98	.05 स्तर पर सार्थक
शहरी	50	15.58	5.008				

व्याख्या- सारणी क्रमांक 01 से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के मध्यमानों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का परिगणित मान 2.203 प्राप्त हुआ, जो क df= 98 पर मानकीकृत सारणी मान 1.98 से अधिक है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है। अतः ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के मध्य सार्थक अन्तर है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के अंकों का मध्यमान क्रमशः 13.54 व 15.58 तथा मानक विचलन क्रमशः 4.214 व 5.008 है। मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट है कि ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों का मध्यमान शहरी ट्रांसजेण्डरों की तुलना में 2.04 कम है अर्थात शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों में ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों की अपेक्षा अधिक मानसिक योग्यता है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना, ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता मे सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत और शोध परिकल्पना स्वीकृत है।

परिकल्पना - 02 अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक - 02 अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात।

ट्रांसजेण्डर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अंतर	क्रांतिक अनुपात	स्वतंत्रता के अंश	सार्थकता स्तर
अल्प शिक्षित	50	11.56	3.682	6	8.14	98	.05 स्तर पर सार्थक
औसत शिक्षित	50	17.56	3.682				

व्याख्या - सारणी क्रमांक 02 से स्पष्ट है कि अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के मध्यमानों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का परिगणित मान 8.14 प्राप्त हुआ, जो क df= 98 पर मानकीकृत सारणी मान 1.98 से अधिक है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है। अतः अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के मध्य सार्थक अन्तर है। अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के अंकों का मध्यमान क्रमशः 11.56 व 17.56 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.682 व 3.682 है। मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट है कि अल्प शिक्षित ट्रांसजेण्डरों का मध्यमान, औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की तुलना में 6 कम है अर्थात औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों में अल्प शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की अपेक्षा अधिक मानसिक योग्यता है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना, अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता मे सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत और शोध परिकल्पना स्वीकृत है।

परिकल्पना - 03 अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक - 03 अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात।

ट्रांसजेण्डर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अंतर	क्रांतिक अनुपात	स्वतंत्रता के अंश	सार्थकता स्तर
अल्प शिक्षित ग्रामीण	25	10.6	3.377	1.84	1.77	48	.05 स्तर पर असार्थक
अल्प शिक्षित शहरी	25	12.5	3.809				

व्याख्या - सारणी क्रमांक 03 से स्पष्ट है कि अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के मध्यमानों के मध्य टी-अनुपात का परिगणित मान 1.77 प्राप्त हुआ, जो क df= 48 पर मानकीकृत सारणी मान 2.01 से कम है, जो कि .05 स्तर पर असार्थक है। अतः अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के अंकों का मध्यमान क्रमशः 10.6 व 12.5 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.377 व 3.809 है। मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट है कि अल्प शिक्षित ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों का मध्यमान अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की तुलना में 1.84 कम है। अल्प शिक्षित ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों में मानसिक योग्यता समान है, क्योंकि दोनों ही क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों में पर्याप्त रुप से समानता है। उनके शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर कोई आवश्यक ध्यान नहीं दिया गया। वे अपने समाज से सम्बन्ध संस्कृति को अपनाकर, अपने कार्य-व्यवसाय में व्यस्त हो गये। जिससे उनका मानसिक स्तर ज्यादा विकसित नहीं हो पाया है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना, अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता मे सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत और शोध परिकल्पना अस्वीकृत है।

परिकल्पना - 04 औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक - 04 औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात।

ट्रांसजेण्डर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अंतर	क्रांतिक अनुपात	स्वतंत्रता के अंश	सार्थकता स्तर
औसत शिक्षित ग्रामीण	25	16.4	2.709	2.24	2.19	48	.05 स्तर पर सार्थक
औसत शिक्षित शहरी	25	18.7	4.21				

व्याख्या - सारणी क्रमांक 04 से स्पष्ट है कि औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के मध्यमानों के मध्य टी-अनुपात का परिगणित मान 2.19 प्राप्त हुआ, जो क df= 48 पर मानकीकृत सारणी मान 2.01 से अधिक है, जो कि .05 स्तर पर सार्थक है। अतः औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के मध्य सार्थक अन्तर है। औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के अंकों का मध्यमान क्रमशः 16.4 व 18.7 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.709 व 4.21 है। मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट है कि औसत शिक्षित ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों का मध्यमान औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की तुलना में 2.24 कम है। अर्थात औसत शिक्षित शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों में औसत शिक्षित ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों की अपेक्षा मानसिक योग्यता अधिक है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना, औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता मे सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत और शोध परिकल्पना स्वीकृत है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष:

1. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर है। अतः ग्रामीण क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता शहरी ट्रांसजेण्डरों से निम्न स्तर की पायी गयी। यह अन्तर ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डरों के मध्यमान के अन्तर से भी स्पष्ट है।

2. अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर है। अतः अल्प शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों से निम्न स्तर की पायी गयी। यह अन्तर अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों के मध्यमान के अन्तर से भी स्पष्ट है।

3. अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नही है। अतः अल्प शिक्षित ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों के समान है।

4. औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता के मध्य सार्थक अन्तर है। अतः औसत शिक्षित ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों से कम है। यह अन्तर औसत शिक्षित ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डरों के मध्यमान के अन्तर से भी स्पष्ट है।

सुझाव: यह शोध ट्रांसजेण्डर समुदाय की मानसिक योग्यता पर एक महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है, शोध के आधार पर कुछ सुझाव दिए जा सकते हैं-

- ट्रांसजेण्डर समुदाय के लिए शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर सुनिश्चित किए जाएं। इस समुदाय को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। सरकारी और निजी स्कूलों में ट्रांसजेण्डरों के लिए विशेष कार्यक्रम या छात्रवृत्तियाँ दी जा सकती हैं, ताकि वे अपनी शिक्षा को बेहतर बना सकें।
- संवेदनशीलता प्रशिक्षण (Sensitivity Training) कार्यक्रमों को स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों में लागू किया जा सकता है ताकि लोग ट्रांसजेण्डरों के अधिकारों और उनकी मानसिक क्षमता के बारे में अधिक समझें।
- ट्रांसजेण्डरों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए विशेष मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों की जरूरत है। इन कार्यक्रमों में काउंसलिंग और मनोविज्ञान से जुड़े उपायों को शामिल किया जा सकता है।
- समाज में स्वीकृति और आत्म-सम्मान को बढ़ाने के लिए समर्थन समूह और हेल्पलाइन सेवाएं शुरू की जा सकती हैं।
- शहरी ट्रांसजेण्डरों की मानसिक योग्यता ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों की तुलना में अधिक पाई गई। इसके लिए विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में शिक्षा और रोजगार के अवसरों का विस्तार करना होगा।
- इसके अलावा, कला, संस्कृति और खेल के माध्यम से आत्मविश्वास और मानसिक विकास को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं। सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में ट्रांसजेण्डरों के मानसिक विकास को समझने के लिए व्यापक अध्ययन किए जाने चाहिए।

- ट्रांसजेण्डरों के लिए विशेष सरकारी नीतियां और योजनाएं तैयार की जानी चाहिए जो उनकी शिक्षा, रोजगार और मानसिक स्वास्थ्य को समर्थन दें। सरकारी सेवाओं में ट्रांसजेण्डरों का समावेश और उनके लिए समाज में सम्मानजनक स्थान सुनिश्चित करने के लिए कार्य किए जाने चाहिए।

इन सिफारिशों के माध्यम से ट्रांसजेण्डर समुदाय की मानसिक योग्यता में सुधार और उनके सामाजिक समावेशन को बढ़ावा दिया जा सकता है। यह न केवल उनके विकास को गति देगा, बल्कि समाज में उनकी स्थिति को भी मजबूत करेगा।

संदर्भ:

- **मदान, पूनम एवं पाण्डेय, रामशकल (2016).** *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- **मदान, पूनम एवं पाण्डेय, रामशकल (2016).** शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार. अग्रवाल पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण 2015-16 पृष्ठ 310.
- **विश्व स्वास्थ्य संगठन (2019).** Mental Health and Transgender People. https://www.who.int
- **भारत सरकार (2020).** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. https://www.mhrd.gov.in
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020),** समता मूलक और समावेशी शिक्षा: सभी के लिए अधिगम. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार. पृष्ठ 40-41.
- **सोनी, सुरेखा (2020).** बालकों की मानसिक योग्यता पर अध्ययन. *शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल, 25*(3), 142-156.
- **अल-ओवेदी, ए. एम., कुतिशात, एफ.आई. (2022).** ''मानसिक योग्यता में अंतर और सामाजिक परिप्रेक्ष्य. *अंतर्राष्ट्रीय मनोविज्ञान जर्नल, 39*(1), 98-115.